International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2
Website: www.thearyapublication.com

बुक्सा जनजाति का शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य: शेरपुर के विशेष सन्दर्भ में

मनोज कुमार[1] & प्रोफेसर गोपाल कृष्ण ठाकुर[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र। भारत
ई-मेल: mkrao3403@gmail.com
[2]हेड & डीन, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र। भारत
ई-मेल: gopalthakur@hindivishwa.ac.in
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17313853

Accepted on: 25/09/2025 Published on: 10/10/2025

शोध सारांश:

बुक्सा जनजाति उत्तराखंड की प्रमुख जनजातियों में से एक महत्त्वपूर्ण जनजातीय समुदाय है, जो नैनीताल, हरिद्वार, उधमसिंह नगर, पौड़ी गडवाल तथा देहरादून जिले के तराई क्षेत्र में निवासरत है। प्रस्तुत शोध पत्र में देहरादून जिले के शेरपुर ग्रामसभा के सन्दर्भ में बुक्सा जनजति का शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को ध्यान में रखकर विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत बुक्सा जनजाति की सांस्कृतिक प्रथाओं यथा- परिवार, रहन-सहन, खान-पान, रंगरूप, वेशभूषा, शादी-विवाह, उत्सव-मनोरंजन एवं मृतक संस्कार इत्यादि को प्रस्तुत किया गया है। जनगणना 2011 के अनुसार शेरपुर ग्राम सभा की कुल जनसंख्या लगभग 1917, शैक्षिक स्तर पर साक्षरता दर कम, प्राथमिक स्तर पर ड्राप आउट दर कम और माध्यमिक स्तर पर ड्राप आउट दर अधिक है। ड्राप आउट दर अधिक होने का सबसे बड़ा कारण आर्थिक भेदभाव की समस्या है।

बीज शब्द: *बुक्सा जनजाति, शैक्षिक संदर्भ और सांस्कृतिक परिदृश्य।*

प्रस्तावना:

भारतीय जनजाति समाज की सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में जनजातियों के लिए 'अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)' शब्दावली का प्रयोग किया गया है। अनुसूचित जनजातियाँ पूरे देश में बड़े पैमाने पर मुख्य धारा के समाज से अलग सुदूर जंगलों, पहाड़ी अथवा पठारी क्षेत्रों में फैली हुई हैं। आदिम लक्षण, भौगोलिक अलगाव, विशिष्ट संस्कृति तथा व्यापक स्तर पर अन्य समुदायों से संपर्क करने में संकोच आदि इन समुदायों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में अनुसूचित

जनजाति के व्यक्तियों की कुल संख्या 10.43 करोड़ है जो देश की कुल जनसंख्या का 8.6% भारत में जनजातीय समुदाय के लोगो की अत्यधिक बड़ी जनसंख्या है और भारत देश में 500 से अधिक प्रमुख जनजाति समुदाय के लोग रहते है। इन जनजातीय समुदायों में से एक बुक्सा जनजाति है जो उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड राज्य में निवास करती है। मुख्य रूप से यह जनजाति उत्तर प्रदेश के बिजनौंर जिला एवं उत्तराखंड राज्य के देहरादून और नैनीताल पौड़ी गढ़वाल आदि जिले में निवासरत है उत्तराखंड राज्य के बुक्सा जनजाति की कुल जनसंख्या 46.770 है बुक्सा जनजाति उत्तराखंड राज्य की तीसरी बड़ी जनजाति है। अतः उत्तराखंड राज्य की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या (1.00.86,292) जिसमें से अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (2,91,903) है। राज्य में अनुसूचित जनजाति का जनसंख्या 3% है और 2011 के जनगणना के अनुसार उत्तराखंड राज्य की साक्षरता दर 79.9% है जिसमें से पुरुष साक्षरता दर 86.3% है और महिला साक्षरता दर 63.9 % है उत्तराखण्ड में निवासरत् भोटिया, थारू, जौनसारी,बुक्सा एवं राजी को वर्ष 1967 में अनुसूचित जनजाति श्रेणी में घोषित किया गया था। उक्त पांच जनजातियों में 'बुक्सा' एवं 'राजी' जनजाति आर्थिक, शैक्षिक एवं सामाजिक रूप से अन्य जनजातियों की अपेक्षा काफी निर्धन एवं पिछड़ी है।

बुक्सा जनजाति का परिचय:

उत्तरखंड की प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह नैनीताल, हरिद्वार, उधमसिंह नगर, पौड़ी गडवाल तथा देहरादून जिलों की ग्रामीण बस्तियों में रहते है। बुक्सा जनजाति की कुल जनसंख्या का 60% भाग उधम सिंह नगर, एवं नैनीताल जिले में बसे हुये है। बुक्सा जनजति के क्षेत्रों को 'भोक्सार' कहते है। शारीरिक गठन की दृष्टि से यह कद में छोटे और मध्यम चौड़ी मुखाकृति तथा सामान्य ऊँची नासिका वाले है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक सुन्दर होती है। स्त्रियों के गोले चेहरा गेहुआ रंग, मंगोल नाकनक्श दिखता है। 'विलियम्स क्रुक ने बताया कि बुक्सा जनजाति की उत्पत्ति के बारे में कहा है कि ए लोग स्वंय को राजपूतों का वंशज मानते है। कुछ लोगों का मत है कि दक्षिण से आये जबकि कुछ लोग कहते है कि ये उज्जैन के निकट धारा नगरी से आये है। इस जनजाति की पारिवारिक व्यवस्था में स्त्रियों का प्रमुख स्थान दिया जाता है। बुक्सा जनजाति में कन्या परिवार की आर्थिक क्रियाओं में सक्रीय सहयोग करती है। इस जनजाति में पुरानी विवाह पद्धति आज भी प्रचलित है, यहाँ जातीय, बहिगोर्त्रिय विवाह प्रचलित है। यहाँ पित्रसत्तात्मक पित्रवंशीय एवं पित्रस्थानीय परिवार पाए जाते है। बुक्सा जनजाति के लोग शंकर जी,

काली माँ, माँ दुर्गा, माँ लक्ष्मी, भगवान राम-कृष्ण की पूजा-पाठ करते है और काशीपुर की 'माँ बालासुन्दरी देवी' सबसे बड़ी देवी मानी जाति है। भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार कुमाऊँ के बुक्सा एवं गढ़वाल मंडल के मेंहरा राजपूतों का डी. एन. ए. टेस्ट किया गया तो यह परिणाम सामने आया की दोनों जातियों का एक डी. एन. ए. एक ही है और बुक्सा तथा मेंहरा राजपूत समाज का शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर तथा इनका रहन-सहन, खान-पान, रीती-रिवाज, संस्कृति वेशभूषा सभी विशेषताए एक सामान है। क्योंकि यह दोनों समाज एक है और इन्हें मेंहरा राजपूत एवं बोक्सा दोनों नाम दिए गये है। गढ़वाल मंडल के मेंहरा राजपूत जाति को कुमाऊँ मंडल की बुक्सा जाति के साथ 1967 में संवैधानिक रूप से शामिल कर बुक्सा नाम दिया गया है। बोक्सा जनजाति के लोग देहरादून जिला के हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उधम सिंह नगर नैनीताल के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है। इस जनजाति के शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक रूप से बहुत पिछड़ा होने के कारण इस जाति को संविधान में दिए गये अनुसूचित जनजाति के अधिकारों योजनाओं आदि का ज्ञान नही है। जिसके कारण इस समुदाय के लोग योजना लाभ नही उठा पाते है। अशिक्षा ही इसके विकास का मुख्य कारण है। बोक्सा जनजाति को शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कुछ कदम उठाये गये लेकीन इनका प्रचार-प्रसार नही हुआ। (1967) में देहरादून की मेंहरा राजपूत जाति को बोक्सा जाति का संवैधानिक दर्जा दिया गया। यह बात इस समाज को अच्छी नहीं लगी और कई जगहों पर इसका अंतर विरोध भी हुआ किन्तु 1976 में पता चला कि हमारी भूमि बिक्री पर सरकार के द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। और बुक्सा समाज के शैक्षिक, आर्थिक, एवं सामाजिक विकास के लिए सरकार द्वारा बहुत सी योजनाएं चलाई जा रही है जिससे बोक्सा समाज का विकास हो। यह जानकर बुक्सा समाज को ख़ुशी मिली। 1976 में उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग के द्वारा बुक्सा जनजाति बाहुल्य प्रत्येक ग्रामसभा में 5-5 व्यक्तियों को प्रतिव्यक्ति 10 हजार का रूपये का अनुदान दिया गया जिसमें एक जोड़ी बैल तथा आवास की छत को ढकने के लिए टिन के 10 टुकड़े दिए गये थे। इसके बाद भेड़, बकरी, गाय, भैस एवं दुकान आवास खाद बीज शौचाल हेतु अनुग्रह धन राशी समाज कल्याण विभाग द्वारा बुक्सा समुदाय को मिलने लगा और इस धनराशी को तीन हिस्से होने लगे जिसमें एक हिस्सा लाभार्थी के हाथ जाता था और दो हिस्सा विचौलिया का होता था। अनुदान की इस प्रक्रिया से सरकार के धन का दुर उपयोग होने के साथ-साथ भ्रष्टाचार को बढावा मिला जिसके कारण बुक्सा समाज के निर्धन, गरीब एवं अनजान लोग अनुदान की लाभकारी योजनाओं से

वंचित रह गये। आज बुक्सा समाज का मध्यस्तों के द्वारा शोषण किया जा रहा है। जिससे इस समाज की स्थिति दयनीय और शोचनीय हो गयी और यह समाज सरकार द्वारा संचालित जनजाति की योजना ओं का लाभ नहीं उठा पा रहे है।

बुक्सा जनजाति की शिक्षा:

बुक्सा जनजाति समुदाय के लोग नदी, नालों, जंगलों, और पहाड़ियों के किनारे ऐसे स्थान पर निवास करते थे। जहाँ पर आवागमन के साधन और शिक्षा के साधन उपलब्ध नहीं थे। शिक्षण संस्थान दुरस्थ होने के कारण इस समाज में जागरूकता का आभाव था जिसके कारण यह सम्पूर्ण समाज शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण रूप से पिछड़ा हुआ था और वर्तमान समय में शिक्षण संस्थान आस-पास होने से भी इस समुदाय में शैक्षिक स्तर पर साक्षरता दर कम है जो प्राथमिक स्तर पर ड्रापआउट दर कम है लेकिन माध्यमिक स्तर पर यह ड्रापआउट दर अधिक है। इस समुदाय के लोगों लिए बड़ी चिंता की बात है। इस ड्रापआउट दर का सबसे बड़ा कारण आर्थिक गरीबी एवं भेदभाव जैसी-समस्या प्रमुख है।

परिवार एवं रहन-सहन:

बुक्सा जनजाति समुदाय में एकाकी एवं संयुक्त दोनों प्रकार के परिवार निवास करते हैं। एकाकी परिवार में पति-पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे तथा संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियों के सदस्य रहते है। जैसे-दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और उनके बच्चे का एक समूह होता है जो एक ही घर में एक साथ रहते है और एक साथ दुःख एवं सुख में सहयोग करते हैं। अधिकांश रूप से बुक्सा जनजाति समुदाय के परिवार में संयुक्त परिवार के रूप में रहते थे। परन्तु वर्तमान में बुक्सा जनजाति समुदाय के लोग एकाकी परिवारों की तरफ अधिक आकर्षित हो रहें है। बुक्सा समाज ने अपना निवास स्थान सघन वन से ढ़ाका हुआ क्षेत्रों में बनाया था। ये वन से ढ़ाका हुआ क्षेत्रों को साफ करके पेड़ों की टहनियों में कच्ची मिट्टी की ईंटों, बांस, घास, नरकोटी एवं खपरैल से अपने को रहने का प्रबंध करते थे। परन्तु वर्तमान समय में भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाए गये आवास योजना के तहत इस जनजाति समुदाय के लोगों को आवास कि सुविधा मिल रही है। बुक्सा जनजाति के लोग वनों से उत्पादित वस्तुओं जैसे-कन्दमूल, फल, शहद तथा जानवरों आदि का मांस खाकर अपना जीवन-यापन करते थे। इनका मुख्य भोजन मछली एवं चावल है और दाल, रोटी, चावल का सेवन करते है। उपलब्धतानुसार सब्जियां जैसे- आलू, टमाटर, बैंगन,

गोभी के अतिरिक्त जंगलों से प्राप्त होने वाली जंगली मौसमी सब्जियां जैसे- पिंदरा, ककोरा, वनमेंठी, परवल आदि प्रमुख है।

वैवाहिक संस्कार:

बुक्सा जनजातीय समुदाय परम्परागत रूप से अन्तर्विवाही ही समूह रहा है। वर्तमान समय में भी गोत्रीय समूह में विवाह सम्बन्ध स्थापित करते हैं। अन्य समूह में विवाह निषेध माना जाता है इस जनजाति में एकल विवाह की परम्परा विद्यमान है परम्परागत रूप से बुक्सा जनजाति में जीवन साथी प्राप्त करने के तरीकों के अन्तर्गत मुख्यतः विधवा पुनर्विवाह, देवर-भाभी विवाह, सहपलायन विवाह, जीजा-साली विवाह, विनिमय विवाह आदि प्रमुख है।

उत्सव एवं मनोरंजन:

दीपावली, दषहरा, होली आदि इनके मुख्य त्योहार हैं। ये लोग दीपावली के त्योहार को बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। धान की फसल कट जाने के बाद अक्टूबर नबम्वर के माह में ही दीपावली का पर्व मनाया जाता है। ये लोग इस त्योहार में खीर , बताशा, और विभिन्न प्रकार के खिलौने पटाखों आदि का प्रयोग अपने घरों मकानों को दिये (चिरागों) तथा मोमबत्तियों के द्वारा भी सजाते हैं। और अब यह लोग अपने मकानों की सजावट बिजली की झालर के द्वारा भी सजाते हैं। तथा विभिन्न प्रकार के व्यंजन खीर-पुरी, कचौड़ी हल्वा, चावल, मछली, मीट आदि का प्रयोग भी खाने में करते हैं। होली भी बुक्सा जनजाति के प्रमुख त्योहारों में से एक है। होली के दिन ये लोग चौपालों में बैठकर व घर-घर जाकर गाना-गाते हैं और ढ़ोलक का प्रयोग करके नाचते भी हैं। यह त्योहार तीन दिन तक चलता है। होली में यह लोग अधिकांशतः मांस मदिरा का भी सेवन करते हैं। जिसे कुछ महिलाएं भी प्रयोग में लेती हैं। होली के एक दिन पहले इस समुदाय में त्योहार रात, में मनाया जाता है। जिसमें प्रमुख चावल के पापड़, कचड़ी आदि होते हैं। और उस पापड़ को पहले यह लोग पूजते हैं फिर खाने के प्रयोग में लेते हैं। पापड़ एवं रंग-बिरंगी कचड़ी के साथ-साथ ये अन्य प्रकार के व्यंजनों को घर-घर जाकर एक दूसरे को बांटते हैं। अबीर-गुलाब लगाने के साथ ही इनकी होली की शुरूआत होती है। यह रंगारंग कार्यक्रम आधे दिन (12 बजे तक चलता है) होली मिलाप के बाद यह लोग फिर एक दूसरे पर रंग डालते हैं। 12 बजे के बाद होली का त्योहार समाप्त हो जाता है। बुक्सा जनजाति में शिवरात्रि का पर्व भी बड़े धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। शिवरात्रि के दिन ये शिव जी के मन्दिरों में जाते हैं। (खास तौर से जिस दिन शिवरात्रि) का मेंला होता है। ये लोग उस दिन शिवजी की पूजा करते हैं। ये वहां घर से ब्रत होकर जाते हैं।

और मन्दिर में जाकर दूध, व जल चढ़ाते हैं। इसके बाद मन्दिरों में ही किसी साफ स्थान पर अपने भोजन को तैयार करते हैं। और वहां पर भण्डारा लगाते हैं। जिसे ये अपनी भाषा में भण्डारों कहते हैं। शिवरात्रि से कई दिनों से ये मन्दिरों में कांवर लाते हैं और शिवरात्रि के दिन मन्दिरों में कांवरों को चढ़ाते हैं। जब तक यह लोग चढ़ाते नहीं हैं तब तक कांवर को जमीन पर नहीं रखते हैं। बल्कि उन्हे कंधों पर ही रखते हैं। और अन्त में जाकर कांवर को चढ़ाते हैं तथा मन्नत (मनौती) मांगते हैं यह परम्परागत रीति-रिवाज इस बुक्सा जनजाति में आज भी प्रचलित है। इसके अलावा, बुक्सा जनजाति में अन्य उत्सवों को भी बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। जैसे दशहरा, रामलीला (मकर संक्रांति) धुधतों, नाग पंचमी, बैसाखी आदि त्योहार इनके प्रमुख हैं। जिनको आज भी यह मनाते हैं। मनोरंजन हेतु प्राचीन समय में बुक्सा जनजाति के लोग रात के समय खाने के बाद चौपालों में बैठकर नाच-गाने व किस्से, कहानियां आदि कहते थे और गीत गाते थे। जिसमें स्त्री-पुरूष बच्चे सभी शामिल होते थे लेकिन साामाजिक परिवर्तन और विभिन्न समुदायों के सम्पर्क में आने से इन सब को अब पीछे छोंड दिया है। होली, दीपावली, दशहरा, जन्माष्टमी आदि त्योहारों को बुक्सा धूमधाम से मनाते हैं। और इनके निजी त्योहारों, में होगड़ ढलइयां, गोटेर तथा भोरो आदि मुख्य हैं। भादो का मेंला, अटरिया का मेंला, तथा कोसी का मेंला, बोक्सार के प्रमुख मेंले हैं। चैती, व कोसी का मेंली देखने सभी लोग जाते हैं।

मृतक संस्कार:

बुक्सा जनजाति समुदाय में व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर सबसे पहले मृतक को नहलाकर उसके पुत्र द्वारा मृतक के शरीर पर हल्दी का लेप लगाकर उसका विवाह की भांति श्रृंगार किया जाता है। स्त्री मृतका पर भी श्रृंगार कर बिन्दिया, कंघा, काजल, सिन्दूर तथा चूड़ियां आदि को अर्पित कर उसे सफेद कपडे से ढंक दिया जाता है मृत्यु को बुक्साओं के जीवन की दूसरी शादी माना जाता है।' शव दाह प्रायः नदी के किनारे किया जाता है बुक्सा जनजाति में मृत्यु के 12वें दिन अंतिम संस्कार क्रिया-कर्म करके ग्रामवासियों को सामूहिक भोजन कराया जाता है।

निष्कर्ष:

बुक्सा जनजाति में शिक्षा के प्रति जागरूकता का आभाव दिखाई दे रहा है। विद्यालयी स्तर पर बालको में शिक्षा के प्रति रूचि का आभाव है विद्यालयी स्तर पर बालको में रूचि और ठहराव के लिए राज्य सरकार के अनुसार अनुसूचित जनजातियों के कल्याण एवं उनके जीवन स्तर में सुधार को उच्च प्राथमिकता दी गयी है, इन वर्गो के

लोगों के आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक उत्थान हेतु कई योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। जिससे इनका सर्वांगीण विकास हो सकें। इस वर्ग के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओ का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजातियों का शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर उन्हें सहयोग कर समाज के मुख्य धारा से जोड़ा जाय जिससे की शिक्षा के क्षेत्र में विकास हो और देश प्रगति की ओर अग्रसर हो जिससे बुक्सा जनजाति समाज को मुख्य धारा से जुड़ सके।

सन्दर्भ:

- चंद्र, एच. (2018). बुक्सा जनजाति में राजनीतिक सहभागिता का मिथक अथवा वास्तविकता: बाजपुर विकास खंड के संदर्भ में. *रिमार्किंग एन एनालिसेशन, 3*(3), 18-25.
- अविदा, & भूषण, पी. (2020). उत्तराखंड में बुक्सा जनजाति की संस्कृति. *जनरल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च, 7*(8), 915-917.
- सिंह, के. & उपाध्याय, एन. (2020). बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 8*(11), 3583-3587.
- भट्ट, एम. (2017). बुक्सा जनजाति की सांस्कृतिक सामाजिक समस्या. *रिसर्च क्रोनी कलर इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी पीयर्स रिव्यू जनरल, 4*(1), 112-114.
- कुमार, एम. (2020). भारत में दलित महिलाओं की दैनिक स्थित: एक राजनीतिक विश्लेषण. *इंटरनेशनल जनरल एडवांसड अकादमिक स्टडी, 2*(3), 689-692.
- वर्मा, एस. & यादव जी एस. (2013). फूड हैबिट्स आमोंग द एडुकेटेड यूथ ऑफ थारू बुक्सा ट्राइब्स. *इंटरनेशनल स्कॉलर्स जनरल, 2*(6), 67-70.
- चंद्र, एच. (2018). परिवर्तन एवं विकास का मिथक कल्याणकारी योजनाओं और पंचायतीय राज के बाजपुर विकास खण्ड की बुक्सा जनजाति महिलाओ के संदर्भ में. *श्रृंखला: एक शोध परक वैचारिक पत्रिका 6*(2),132-146.
- खत्री, एन. (2015). हेल्थ अवेयरनेस थ्रू यूज ऑफ कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन एमोंग बुक्सा ड्राइव्स ऑफ हिमालयन रीज़न. *एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी*.
- प्रधान, दी. (2020). उत्तराखण्ड की बुक्सा जनजाति का एक सामाजिक अध्ययन. अनु बुक्स.
- लाल, द. (2020). बुक्सा जन जागृति. अखिल भारतीय बुक्सा जनजाति विकास समिति देहाडून उत्तराखण्ड .